



## विपक्षी खेमे में ही ज्यादा तिलमिलाहट

ममता का ताजा बयान उनकी उस आक्रामक नीति का ही हिस्सा है जिसके तहत उनकी पार्टी अब सारे संकोच त्यागकर कांग्रेस के घर सेंध लगाने में जुटी दिख रही है। तृणमूल नेताओं का कहना था कि इसे कांग्रेस के खिलाफ कदम के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।

नवीन पंडित।।

बीजेपी के खिलाफ विपक्ष का मोर्चा मजबूत करने की मुहिम पर निकलीं तृणमूल कांग्रेस नेता ममता बनर्जी ने महाराष्ट्र में जो आक्रामक तेवर दिखाए, उससे सत्तारूढ़ पक्ष के बजाय विपक्षी खेमे में ही ज्यादा तिलमिलाहट दिख रही है। दो दिन की यात्रा पर महाराष्ट्र पहुंचीं ममता ने एक सवाल के जवाब में कहा, 'कैसा यूपीए? कोई यूपीए नहीं है अब।' कांग्रेस पार्टी और उसके नेतृत्व पर सीधा हमला बोलते हुए वह यहां तक कह गई कि ज्यादातर समय विदेश में बिताते हुए आप राजनीति नहीं कर सकते। जाहिर है, उनका इशारा राहुल गांधी की तरफ था। बीजेपी यही बात कहते हुए अक्सर राहुल पर निशाना साधती रही है। बहरहाल, कांग्रेस को

लगभग खारिज करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि सभी क्षेत्रीय पार्टियां साथ आ जाएं तो बीजेपी को आसानी से हराया जा सकता है। ममता का ताजा बयान उनकी उस आक्रामक नीति का ही हिस्सा है जिसके तहत उनकी पार्टी अब सारे संकोच त्यागकर कांग्रेस के घर सेंध लगाने में जुटी दिख रही है। कुछ दिनों पहले जब कांग्रेस नेता सुभिता देव ने तृणमूल जॉइन किया था तो उसे लेकर पार्टी के नेता बचाव की मुद्रा में दिख रहे थे।

तृणमूल नेताओं का कहना था कि इसे कांग्रेस के खिलाफ कदम के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। लेकिन उसके बाद हाल में कांग्रेस के कई नेता तृणमूल में चले गए और खुद ममता बनर्जी ने

बयान दिया कि बीजेपी से लड़ने की इच्छा रखने वाले हर नेता का वह स्वागत करेगी। साफ है कि पार्टी की रणनीति में यह नया बदलाव है। वैसे हर पार्टी को अपने विस्तार की कोशिश करने और उसके लिए अपना रास्ता चुनने का अधिकार है और जहां तक कांग्रेस के खिलाफ दिए गए तृणमूल चीफ के बयान का सवाल है तो उसका जवाब देना कांग्रेस नेताओं का काम है। लेकिन अगर सत्तारूढ़ बीजेपी को उखाड़ फेंकने के लिए विपक्ष की ताकत को एकजुट करने के घोषित मकसद के लिहाज से देखा जाए तो इस रणनीति का दूर तक जाना मुश्किल लगता है। आज की गिरी हुई स्थिति में भी कांग्रेस

न केवल विपक्ष की सबसे बड़ी पार्टी है बल्कि करीब 20 फीसदी वोट भी उसके पास हैं। ममता के संभावित रुख का अंदाजा एनसीपी को पहले से ही था। शायद इसीलिए एनसीपी के प्रवक्ता ने ममता-पवार मुलाकात के एक दिन पहले ही कहा कि कांग्रेस को छोड़कर विपक्ष की किसी पहल के बारे में नहीं सोचा जा सकता।

बैठक के बाद भी ममता के मुकाबले पवार का रुख संतुलित था। बावजूद इसके, दोनों नेताओं की इस पहल का मर्म यही है कि पहले गैर कांग्रेस, गैर बीजेपी दलों का एक ग्रुप बन जाए, फिर वह ग्रुप कांग्रेस से बारगेन करे। चाहे जितना भी घुमा-फिराकर करें, पर तीसरे मोर्चे की यह काठ की हांडी फिर से चूल्हे पर चढ़ाने की कोशिश मौजूदा हालात में नादाना ही कहलाएगी।



## कम धार्मिकता

अशोक वोहरा। धार्मिक अनुष्ठानों के संदर्भ में, विभिन्न प्रकार के मतिभ्रम पदार्थ अक्सर परमानंद और रहस्यमय राज्यों को सुविधाजनक बनाने के लिए मौजूद होते हैं, जिनमें शामिल हैं। वास्तविकता और स्वयं की परिवर्तित धारणा, मनोदशा, दृश्य और श्रवण मतिभ्रम, आदि की गहनता। मस्तिष्क समारोह और धार्मिक अनुभवों के बीच संबंध भी मस्तिष्क रोग या चोट के मामलों में स्पष्ट है। मिर्गी के रोगियों के एक छोटे समूह में, मस्तिष्क की असामान्य विद्युत गतिविधि के परिणामस्वरूप तीव्र धार्मिक भय, परमानंद या दैवीय उपस्थिति की भावनाएं होती हैं, जो एक जब्बी की ओर जाने वाली आभा का गठन करती हैं। जब ये मामले दुर्लभ होते हैं, तब भी वे अक्सर अटकलें उत्पन्न करने के लिए पर्याप्त होते हैं। कुछ ऐसा ही सियोफ्रेनिक रोगियों के मामले में भी पाया गया है।

## धर्म-दर्शन



## संपादकीय

### फ्यूजन पर नए प्रयोग

कुछ समय पहले चाइना इंस्टिट्यूट ऑफ प्लाज्मा फिजिक्स के न्यूक्लियर फ्यूजन रिएक्टर 'ईस्ट' में वैज्ञानिकों ने कुछ नए प्रयोगों की शुरुआत की है। अभी रिएक्टर ईस्ट में सूर्य की सतह के तापमान से 7 गुना ज्यादा तापमान पैदा किया जा सकता है और इसको लगभग 100 सेकंड तक स्थिर भी रखा जा सकता है। ग्लोबल टाइम्स की एक हालिया रिपोर्ट के मुताबिक, रिएक्टर के तापमान और समय सीमा को बढ़ाने के लिए नए प्रयोग शुरू किए गए हैं। अगर इसमें कामयाबी मिल जाती है तो पृथ्वी को नुकसान पहुंचाए बिना बड़े पैमाने पर एनर्जी पैदा करने का तरीका मिल जाएगा। बीते 24 नवंबर को नासा ने कैलिफोर्निया वेंडेबर्ग स्पेसफोर्स बेस से एक रॉकेट के जरिए 'डार्ट' यानी डबल एस्टेरॉयड रिडाइरैक्शन टेस्ट मिशन लॉन्च किया। इसके जरिए क्षुद्र ग्रहों यानी एस्टेरॉयड्स से पृथ्वी को बचाने की तकनीक का परीक्षण किया जाएगा। योजना के मुताबिक, एक अंतरिक्ष यान 24 हजार किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से 2 अक्टूबर 2022 को डाइमॉर्फस नामक क्षुद्र ग्रह से टकराएगा और उसके रास्ते को बदलने की कोशिश करेगा। नासा ने इसे 'प्लैनेट्री डिफेंस' नाम दिया है। यह प्रयोग काइनेटिक इम्पैक्टर टेक्नॉलॉजी पर आधारित है। फ्यूजन को लेकर आईटीईआर दुनिया का सबसे बड़ा प्रोजेक्ट है। इस परियोजना के तहत एक रिएक्टर बनाया जा रहा है। उसमें न्यूक्लियर फ्यूजन की प्रक्रिया के आधार पर एनर्जी से जुड़ी रिसर्च की जाएगी।

जेम्स वेब इंफ्रारेड प्रकाश में ब्रह्मांड की तमाम चीजों की जांच कर सकेगा। यह अंतरिक्ष की गहराइयों में वह सब कुछ देख पाएगा, जिसे ऑप्टिकल टेलिस्कोप या हबल टेलिस्कोप के जरिए नहीं देखा जा सकता था।

## शुरुआती आकाशगंगाएं

प्रदीप।।

अंतरिक्ष के रहस्यों को सुलझाने के लिहाज से पिछले साल कुछ ऐसे महत्वपूर्ण कदम उठाए गए हैं, जिनके नतीजे इस साल मिलने लगेंगे। इनमें सबसे खास है हाल ही में अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा की ओर से 'जेम्स वेब स्पेस टेलिस्कोप' लॉन्च किया जाना। यह अब तक का सबसे शक्तिशाली स्पेस ऑब्जर्वेटरी है। जेम्स वेब धरती से 15 लाख किलोमीटर दूर अपनी मंजिल की ओर बढ़ रहा है। मंजिल है लैंगरेज पॉइंट। वहां पहुंचने में इसे एक महीने का वक्त लगेगा। फिर अगले पांच महीनों में यह काम करने लगेगा। जेम्स वेब इंफ्रारेड प्रकाश में ब्रह्मांड की तमाम चीजों की जांच कर सकेगा। यह अंतरिक्ष की गहराइयों में वह सब कुछ देख पाएगा, जिसे ऑप्टिकल टेलिस्कोप या हबल टेलिस्कोप के जरिए नहीं देखा जा सकता था। हमारा ब्रह्मांड तेजी से फैल रहा है और वे आकाशगंगाएं पृथ्वी से दूर जा रही हैं, जो ब्रह्मांड की शुरुआत में बनी थीं। दूर जाने वाली आकाशगंगाओं के प्रकाश की वेवलेंथ दिखाई देने वाले प्रकाश से इंफ्रारेड प्रकाश में बदल गई हैं। ऐसे में जेम्स वेब इंफ्रारेड की खिड़की का इस्तेमाल कर ब्रह्मांड की अनदेखी दुनिया की जानकारी जुटाने में मददगार होगा।

जेम्स वेब टेलिस्कोप आधुनिक इंजीनियरिंग



का शानदार नमूना है। इसमें बहुत बड़ा मिरर लगा है। हबल टेलिस्कोप के प्राइमरी मिरर की चौड़ाई ढाई मीटर है, जबकि जेम्स वेब टेलिस्कोप की चौड़ाई साढ़े छह मीटर है। जेम्स वेब टेलिस्कोप की क्षमता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इस पर एक सनशील्ड लगा हुआ है, जिसका आकार एक टेनिस कोर्ट यानी तकरीबन 22 मीटर के बराबर है। इसमें चार कैमरे और सेंसर मॉनिटर भी हैं।

जेम्स वेब टेलिस्कोप मिशन के चार मुख्य उद्देश्य हैं। पहला, बिग बैंग के बाद बनने वाले शुरुआती तारों और आकाशगंगाओं की खोज। दूसरा, तारों के चारों ओर के ग्रहों का अध्ययन। तीसरा, तारों और आकाशगंगाओं की उत्पत्ति को समझते हुए यह मसला सुलझाना कि ब्रह्मांड कैसे बना। इसका चौथा

मकसद है, जीवन की उत्पत्ति का रहस्य सुलझाना। आने वाले वर्षों में जेम्स वेब से हमें कई सवालों के जवाब मिल सकते हैं। हबल की मदद से हम बिग बैंग के करीब 40 करोड़ साल बाद की तस्वीरों तक ही पहुंच सकते थे, लेकिन जेम्स वेब हमें बिग बैंग के 10 करोड़ साल बाद तक का ब्रह्मांड दिखाने में सक्षम होगा।

नासा के वैज्ञानिकों ने हाल में जानकारी दी थी कि सूर्य के रहस्यों को सुलझाने के इरादे से 2018 में जिस पार्कर सोलर प्रोब को लॉन्च किया गया था, उसने एक तरह से सूरज को छू लिया है। दरअसल, पार्कर सूरज की सतह से महज 79 लाख किलोमीटर दूर था। इंसानी हाथों से बनी कोई भी मशीन सूरज के इतने करीब नहीं पहुंच सकती थी। पार्कर का मकसद सूर्य और पृथ्वी के संबंधों को समझना है। सूरज केवल प्रकाश और गर्मी ही नहीं देता, बल्कि उससे हमें सौर पदार्थ का एक अदृश्य प्रवाह भी मिलता है। इस अदृश्य प्रवाह में चार्ज्ड पार्टिकल्स, हाई एनर्जी इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडिएशन और स्ट्रॉन्ग मैग्नेटिक फील्ड लाइंस शामिल हैं, जिन्हें 'सौर तूफान' के रूप में जाना जाता है। हमारी पृथ्वी का ऊपरी वायुमंडल और इसका प्रोटेक्टिव मैग्नेटिक फील्ड सौर तूफानों को लगातार झेलता रहता है। जीपीएस, इंटरनेट और विद्युत सेवाओं पर इनका गहरा प्रभाव पड़ता है। पृथ्वी की रक्षा के लिए इस तरह की तकनीक का यह पहला प्रदर्शन होगा।

अष्टयोग-5059						
1	5	3	7			
	30	7	31	4	34	2
6		2		5		
	29		33		37	3
4		1	6			7
	30		32		34	
	5			1	2	4

अष्टयोग 5058 का हल						
6	5	4	3	2	7	1
2	34	7	30	4	28	2
7	2	1	6	3	5	4
3	25	6	33	6	41	5
1	3	2	4	5	7	6
5	28	5	33	7	38	3
4	5	3	6	1	2	7

## अपना ब्लॉग

तकनीक मददगार होगी या नहीं

मोहन। सोलर पार्कर प्रोब की मदद से वैज्ञानिक सौर तूफानों पर रिसर्च करना चाहते हैं। इससे अंतरिक्ष यात्रियों, उपग्रहों, संचार सेवाओं और विद्युत ग्रिडों की सुरक्षा के लिए एहतियात बरतने में मदद मिल सकती है। सूर्य का अध्ययन करने वाला पहला भारतीय मिशन 'आदित्य-एल1' भी 2022 में लॉन्च किया जा सकता है। वैज्ञानिक लंबे अरसे से ऐसे ईंधन की खोज में भी हैं, जो पर्यावरण और मानव शरीर को नुकसान पहुंचाए बगैर ऊर्जा से जुड़ी हमारी जरूरतें पूरी कर सके। यह तलाश न्यूक्लियर फ्यूजन पर खत्म होती दिखाई दे रही है। न्यूक्लियर फ्यूजन की प्रक्रिया ही हमारे सूर्य और दूसरे तारों की ऊर्जा का जरिया है। वैज्ञानिक कई वर्षों से सूर्य में होने वाले न्यूक्लियर फ्यूजन को पृथ्वी पर कराने के लिए प्रयासरत हैं, जिससे बिजली पैदा की जा सके। इसका मकसद यह पता लगाना है कि अगर भविष्य में कोई क्षुद्र ग्रह या धूमकेतु पृथ्वी की ओर आता हुआ दिखाई दे तो उसे उसके यात्रा पथ से हटाने में यह तकनीक मददगार होगी या नहीं।

